पापापहारि दुरितारि तरंगधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाबिदारि
झंकारकारि हरिपादरजोपहारि
गांगंपुनात्तु सततं शुभकारि वारि।।१

हे भय हारिणि हे भवतारिणि
शोक विनाशनि पावनि गंगा
शंभुजटा में विराज रही
शुभदायिनी मोक्ष प्रदायिनी गंगा
भागीरथी जननी जल की
शुचि अमृत धार प्रवाहिनि गंगा
कष्ट हरो दुःख दूर करो
शुभ दायिनि हे वर दायिनि गंगा

जय जय भगीरथ नन्दिनि मुनिचय चकोर-चन्दनि,
नर-नाग-बिबुध-बन्दिनि जय जहनु बालिका।

🚩गणेश जी की प्रार्थना🚩

अयि मंडल मंडित गंड तलम,
तिलकी कृत शोभित चंद्र कलं। ।
करधात विदारि तवैरि दलम,
प्रणमामि गणाधि पतिम जटिलं।।१

बंदउँ शंभू भवानी के नंदन
आनंद कंद निकंद पतीजै
देवन दायक रिद्धि व सिद्धि के
हे गणनायक मो पे पसीजै
बुद्धि के दाता गजानन आनन।
मेरी कुबुद्धि सुबुद्धि करिजै,
मूषक वाहन छाडि विनायक।
पूजा में आई के आसन लीजै।।२

होहु सहायक आज विनायक
लायक हो सब देवन्ह माहीं
मंगल मूल हरहु त्र्यशूल
करै अनुकूल शिवा शिवकाही
जानत आप प्रभु को प्रताप
मिटावहुं ताप करौ अब छाहीं
हे गणनाथ अनाथ प्रभु अब
होउ सनाथ गहे निज छाहीं।।३

🚩 गौरीजी की प्रार्थना🚩

शक्ति स्वरूपा सुमंगलकारिणी ,
काज सवाँरती हो सबके माँ ।
होति कृपा जो तुम्हारी रहे तो ,
बने सब काज न देर लगे माँ ।।
सीता ने पूजा तुम्हारी किया तो ,
प्रसन्न हुई वर राम मिले माँ ।
मेरी भी कामना पूर्ण करो ,
मातु गौरी हमारा भी कष्ट हरो माँ ।।

🚩 वरुणजी की प्रार्थना🚩

वरुणाधिप ध्यान धरू
जग में जल जीवन देवन हारे
कीजै कृपा अवनी तल पे
पशु मानव दानव होही सुखारे
सिन्धू समेत लिए सरिता जल
दिव्य तरंग उमंग सवारे
जोरी के हाथ कहे यजमान
पधारो यहाँ जल नाथ हमार

षोडश मातृका प्रार्थना

हेरण-चण्डी कृपा करिये,
कब से हम भक्त रहे है पुकारी,
हे हिंग लाज भवानि शुनो,
अब जात सही न बिपत्ती हमारी
हे जग वारिद हे भव हारिण,
है सुख कारिण मातु हमारी,
आज अनाथ हुआ विप्रनाथ,
बची अब केवल आस तुम्हारी,

हे महरानी महा वरदायिनी,
महा सुख राशि महेश भवानी
हे महिमा मयी मैहर वासिनि,
मानव दानव देव सुखारे
हे महिषासुर मर्दिनी मातु
मनोहर मोहक मूर्ति तुम्हारी
आज अनाथ हुआ विप्रनाथ,
बची अब केवल आस तुम्हारी

सप्तघृत मातृका प्रार्थना

दैत्य संहारन वेद उच्चारन
दुष्टन को तुमहीं खलती हो।
खड्ग त्रिशूल लिये धनुबान
औ सिंह चढ़े रण में लड़ती हो॥
दासके साथ सहाय सदा
सो दया करि आन फते करती हो।
मोहिं पुकारत देर भई जगदम्ब।।
विलम्ब कहाँ करती हो॥१॥

बान सिरान कि सिँह हेरान
कि ध्यान धरे प्रभु को जपती हो।
की कहुँ सेवक कष्ट परो तहँ
अष्टभुजा बल दे लड़ती हो॥
सिँह चढ़े सिर छत्र विराजत
लाल ध्वजा रण में फिरती हो।
मोहिं पुकारत देर भई जगदम्ब
विलम्ब कहाँ करती हो॥

🚩 वास्तु,क्षेत्रपाल प्रार्थना🚩

ग्रहनाथ सनाथ करो वसुधा
नर दानव देवन के रखवारे
साँप स्वरूप विचित्र है आपका
पाप का नाम मिटावन हारे
शान्ति समृद्धि बढ़े दिन रैन
मिले सुख चैन सुकीर्ति संवारे
पूजा मे आय के वास्तु प्रभु
अब पूर्ण करो सब कार्य हमारे

क्षेत्र की रक्षा करो क्षेत्रपाल,
बेहाल पुकारत है नरनारी,
कीजै कृपा अवनी तल पे
धन धान्य से पूर्णकरो सुखकारी,
डाकिनी प्रेत पिशाचिनि के संग,
आओ यहां मुद मंगलकारी,
कोटि प्राणाम करै यजमान,
दयालु दया करिये दु:ख हारी

🚩नवग्रह प्रार्थना🚩

सूर्य हरें तम कष्ट करें कम,
चन्द्र बड़े मुद मंगलकारी ।
बुद्धि पवित्र करे बुध नित्य,
बढ़ावत ज्ञान गुरु सुखकारी ।।
सुचि जीवन शुक्र सदैव करे,
शनि शोक हरें रवि दृष्टि निहारी ।
राहु रहें गति ,केतु करें मति,
दिव्य नवग्रह सोहत भारी ।।

रविचंद्र शनैश्चर , केतु युतंः !!
ग्रहराज नमामि नमामि सदा
गुरु शुक्र समर्पित , पुष्प लता
ग्रहराज नमामि नमामि सादा
गूज राहु सदा , बुध बाहु बढ़ा !
ग्रहराज नमामि नमामि सदा ।
ग्रह रक्षा करा , ग्रह शांति करा
ग्रहराज नमामि नमामि सदा ।।

नवग्रह प्रार्थना

सूर्य हरें तम कष्ट करें कम,
चन्द्र बड़े मुद मंगलकारी ।
बुद्धि पवित्र करे बुध नित्य,
बढ़ावत ज्ञान गुरु सुखकारी ।।
सुचि जीवन शुक्र सदैव करे,
शनि शोक हरें रवि दृष्टि निहारी ।
राहु रहें गति ,केतु करें मति,
दिव्य नवग्रह सोहत भारी ।।

रविचंद्र शनैश्चर , केतु युतंः !!
ग्रहराज नमामि नमामि सदा
गुरु शुक्र समर्पित , पुष्प लता
ग्रहराज नमामि नमामि सादा
गूज राहु सदा , बुध बाहु बढ़ा !
ग्रहराज नमामि नमामि सदा ।
ग्रह रक्षा करा , ग्रह शांति करा
ग्रहराज नमामि नमामि सदा ।।

शीश पे गंगा हे कण्ठ भुजंगा हे
कोटि अनंग लजावन वाले ।
हाथ त्रिशूल हे नाशक शूल
वही डमरू के बजावन वाले ।।
मृगछाल सुशोभित है कटि पे
और भक्त की लाज बचावन वाले ।
शंकर की महिमा है अपरम्पार
ये दानी बड़े है बड़े भोले भाले

निराकारमोङ्करमूलं तुरीयं
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं
गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥

डिम डिम डिमकत डिम्ब डिम्ब डमरू पाणौ सदा यस्य वै।
फुं फुं फुंकत सर्प जाल ह्रदयं घं घंट घंतार्णवं।।
भं भं भमकत भम्भ भम्भ नयनं कारुण्य पूर्णा करम।
बम बम बमकत बम्ब बम्ब बहनम ध्यायेत सदा शंकरं।।

हाथ में चक्र रहे जिनके
अरु शेष की शय्या विराज रहे है
भक्त का मान सदा रखते
निज भक्त का भाव निहार रहे है ।।
ध्यान करें जो सदा इनका
उसकी मनसा को सवाँर रहे है ।
हे शालिग्राम । हे विष्णु चतुर्भुज ।
आपको भक्त पुकार रहे है ।।

जग झंझट में नित व्यस्त रहे
नहीं याद किया प्रभु को मनसे
अभिमान में मस्त रहे दिन रैन
नहीं पेट भरा कबहूं धन से
ममता अरु माया रहे पकड़े
जकड़े परिवार के बन्धन से
यजमान जो चाहत हौ सुख शांति
तो प्रेम करो रघुनंदन से
तो प्रेम करो यदुनंदन से

प्रधान पीठ प्रार्थना

वेदी प्रधान पे देव प्रधान
कृपा, करिके अब आय पधारो,
देवन के संग है सर्वेश
हमें भव सिन्धु से पार उतारो
यज्ञ क्रिया को पूर्ण करो.
इस पूर्ण समाज को आज संवारो.
होवे सुखी यजमान सभी
विप्रनाथ के जीवन को रखवारो

"यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुत:
स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवै:।
वेदै:सांग पद क्रमोपनिषदै:
गायन्ति यं सामगा:।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु:सुरासुरगणा:
देवाय तस्मै नम:"।।

ज्ञान की दायिनी बुद्धि प्रदायिनी,
दूर करो मन का अंधियारा।
मूढ हूँ मै असहाय हूँ मैं,
जननी ममता माँ दे दो सहारा।।
मातु कृपा करि कष्ट हरो
अपराध विसार के आज हमारा।
देवी तुम्हारी करूं विनती,
शरणागत है यह पुत्र तुम्हारा।।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला
या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा
या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभि
र्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती
निःशेषजाड्यापहा

🚩 विप्रार्चन प्रार्थना 🚩

आकाशात्पतितं तोयं यथा गक्षति सागरं
सर्वदेव नमस्कारं केशवंप्रति गच्छति

विप्रन के पग धोवन से जेहि
द्वारपे कीचड होवत नाही।
गर्जन वेद व शास्त्रन के ध्वनि
से नभ मंडल गूंजत नाही
स्वाहा स्वधा करके जेहि जोजन
आहुति कर्म करावत नाही
सो घर है, श्मशान के भाँति
तहाँ सुख सम्पति आवत नाही।।

न विप्र पादोदक पंकलानी
न वेद शास्त्रो ध्वनिगर्जितानी
स्वाहा स्वधा का रविवर्जितानी
श्मशान तुल्यानि गृहाणि तानी

विप्र प्रसादात् धरणी धरोहं।
विप्र प्रसादात् कमला वरोहं।
विप्र प्रसादात् अजिताजितोहं
विप्र प्रसादात् मम् राम नामम् ॥

नैवेद्य प्रार्थना

आओर देवा भोग लगाओ देवा
मेरा भोग करो स्वीकार हो
अब आओ भोग लगा जाओ
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण२
चारों दिशाओं से आओ
मैं वारी जाऊ, आओर२..
सबरी के वेर सुदामा के तंडुल२
रुचि रुचि भोग लगाओ
मैं वारी जाऊ, आओर२...
दुर्योधन घर मेवा त्याग्योर
साग विदुर घर खायो
मैं वारी जाऊं, आओर२..
प्रसाद आपका जो कोई पावे२
सोई अमर होई जाय
मैं वारी जाऊं, आओर२...
ऐसा भोग लगाओ मेरे प्रभु जी२
सब अमृत होई जाय
मैं वारी जाऊ२, आओर२...

अवध गीत

अवध सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
छोड़ो न बैयां मोरी, छोड़ो न बैयां.२
जगत सैंया मोरी छोड़ो न बैयां
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.
अवध सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
तुम जानत सब अवगुण मेरो.२
तुमसे नाथ२ छिपो नैय्या
मोरी छोड़ो न बैयां.
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.
अवध सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
भव सागर में बही जात है.२
अब तो नाथ.२धरो बहियां
मोरी छोड़ो न बैयां
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.
अवध सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
ना हम किन्ही साधू सेवा.२
विप्रन दान.२ दीयो नैय्या
मोरी छोड़ो न बैयां
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.
अवध सैंया मोरी छोड़ो न बयां.२
भानु कुंवरि चरनन कि चेरी.२
अब तो नाथ.२ गहो बैयां
मोरी छोड़ो न बैयां.
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.
अवध सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
जगत सैंया मोरी छोड़ो न बैयां
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.
अवध सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.२
सिया के सैंया मोरी छोड़ो न बैयां.

प्रकाशक –

श्रीअयोध्या प्रकाशन

हनुमानगढ़ी, सिंहद्वार

प्रेषक– सहयोगी–

पं.आदित्यमणि तिवारी श्रीठाकुर जी महाराज

8090009816

पं. आदित्यमणि तिवारी